प्यारे बेटे

लेखक– अल्लामा शेख अली तन्तावी रह.

अनुवादक– डॉ0 रफ़ीक़ अहमद

भई, तुम मुझे खत लिखते हुये तज़बज़ब का शिकार क्यों हो, और इस क़द्र शर्म व हया क्यों महसूस होती है। क्या तुम्हारा ख्याल यह है कि सिर्फ तुम्हारे ही अन्दर सेक्स की आग भड़क रही है और तुम सारे इन्सानों से हट कर कुछ दूसरी ख़ुसूसियत रखते हो ?

नहीं, मेरे बेटे ! ज़्यादा परेशान होने की ज़रूरत नहीं। तसल्ली रखो, तुम अकेले इस बीमारी में गिरफ्तार नहीं हो, बल्कि यह बीमारी तो सारे ही नवजवानों को लगी हुई है, मैं इस सिलसिले में पहले भी लिख चुका हूँ और अब भी लिखता रहा हूँ, पुरानी बातों को दुहराना अच्छा नहीं लगता और अपने पुराने लेखों की मिसालें पेश करना मेरी आदत नहीं। अगर ऐसा होता तो तुम्हारे लिये भी कुछ बातें नक़ल कर देता या कम से कम उसका हवाला ही दे देता।

सत्रह साल की उम्र में अगर जवानी की मस्ती ने तुम्हारी नींद उचाट कर दी है तो यह कोई ताज्जुब की बात नहीं, न जाने ऐसे कितने छोटों और बड़ों की नीदें इस सरमस्ती ने उचाट की हैं, तुलबा का ध्यान तालीम से हटा दी, मज़दूर की दिलचश्पी काम से और कारोबारियों का ध्यान कारोबार से हटा दिया। और वह मुहब्बत क्या चीज़ है, जिसकी शान में शायरों ने तारीफ़ के पुल बांधे और जिसकी समीक्षा में साहित्यकारों ने साहित्य लिखे। यह वही तो है जिसे तुम अपने अन्दर महसूस करते हो। फर्क़ अगर

है तो यह कि तुमने मुहब्बत को एकदम खुला और स्पष्ट रूप में देखा है इसलिये तुम्हें उसके सम्बंध से कोई ग़लतफहमी नहीं हुई। मगर दूसरे लोगों ने उसे देखकर खुद तो धोखा नहीं खाया लेकिन उसकी हक़ीक़त को दूसरों से छिपा रखा, लोगों को धोखा देने के लिये इस पर खुशनुमा और दिल फ़रेब लेवल लगा दिया। तुम्हारी मिसाल पानी के चश्मे से सीधे मुंह लगाकर पीने वाले की है और उनकी मिसाल उस व्यक्ति की है, जिसने ऐसे सुनहरे प्याले से पानी पिया, जिसके किनारों पर सोने के पानी से बेल-बूटे बनाये गये हों। प्याला भी अबुनवास (प्रसिद्ध अरबी शायर जिसके शायरी में शराब और शबाब का उल्लेख बहुत है) जिसके अन्दर क़िसरा (ईरानी बादशाह की उपाधि) का राजसी ठाठ-बाट हो, या फिर उसकी मिसाल चश्मे के पानी के मुकाबले में रहट के पानी जैसी है।

तुम्हारे ख़त में जिन्सी जज़्बात (कामोत्तेजना) की झलक बिल्कुल ऐसी है जैसी शायरों की गज़लों में, पेन्टरों की पेन्टिंग में और गायकों के सुरीली आवाज में नज़र आती है। लेकिन दोनों में एक बुनियादी फ़र्क है, और वह यह कि यहां पर मक़सद बिल्कुल स्पष्ट और साफ़ है और वहां बिल्कुल छुपा और पोशीदा। बदतरीन बीमारी वह है जो अन्दर छुपी हुई और पोशीदा हो।

जब तुम्हारी उम्र की मंज़िल में कोई नवजवान क़दम

रखता है तो एक सोई हुई ख्वाहिश भड़क उठती है, जिसके असरात वह अपने मन-मस्तिष्क में महसूस करता है। फिर तो उसकी नज़रों में दुनिया ही बदल जाती है और इन्सानों का भी वह दूसरी नज़र से देखने लगता है चुनांचे यह वजह है कि वह औरत को गोश्त-पोस्त का बना हुआ इन्सान नहीं समझता।

हालांकि आम लोगों की जो खूबियां होती हैं वही इसमें भी होती हैं और जो बुराइयां इनमें होतीं हैं वही इसमें भी पाई जाती हैं। मगर वह तो उम्मीदों का केन्द्र बन जाती हैं और सारी ख्वाहिशें और तमन्नायें आ आकर इसमें इकट्ठा होती रहती हैं। नौजवान अपने अन्दरूनी विचारों और कल्पनाओं को ऐसा लिबास पहना देता है जिसमें सारे ऐब छुप जाते हैं और उस लिबास को वह खालिस भलाई और खूबसूरती का नमूना बनाकर पेश करता है। इस लिबादे से वह वही काम लेता है जो काम एक बुत बनाने वाला पत्थर से लेता है। खुद अपने हाथ से वह एक पत्थर तराश्ता है और फिर उसे खुदा मानकर उसकी पूजा और उपासना शुरू कर देता है। बुतपरस्त के लिये वह बुत पत्थर का देवता है और आशिक के लिये औरत एक ख्याली बुत।

यह सारी बातें फ़िक्र से सम्बंध रखती हैं और उसकी वजह भी समझ में आती है, मगर जो बात न तो अक्ल और विवेक की कसौटी पर पूरी उतरती है और न फितरत से उसका कोई जोड़ है, वह यह कि यह सारी बातें एक लड़का 20 या 25 साल की उम्र तक स्कूल में रोके रखे।

सवाल यह है कि इन शेष वर्षों में वह नौजवान करे तो क्या करे जबकि यह वक्त ही भरपूर जवानी का होता है, जिन्सी ख्वाहिश (कामवासना) का ज़ोर पूरे शबाब पर होता है और बदन भी शायद हैजान और बेचैनी का शिकार हो जाता है।

फिर वह क्या करे ?

अस्ल मुश्किल तो यही है–

रहा क़ुदरत का क़ानून और बदन का नेचर। तो उससे कहता है कि शादी करले और जहां तक सामाजी हालात और तरीक़ा-ए-तालीम का सवाल है तो उसका तक़ाज़ा यह होता है कि तीनों चीज़ों में से कोई एक चीज़ अपना ले, लेकिन इनमें से एक भी अच्छी नहीं है।

हां तुम चौथी चीज़ के बारे में ज़रूर सोचो कि वही एक बेहतर रास्ता है और वह है शादी, नफ़्स को खामोश करने के और भी रास्ते हैं।

एक तरीक़ा तो यह है कि अपनी ख़्वाहिशों, नफ़्स की चाहतों और जिन्सी तमन्नाओं (कामेच्छाओं) को तर्क कर दो। फिर उसके मुख्तलिफ पहलुओं पर ग़ौर व फिक्र करो, अश्लील क़िस्से कहानियों, गन्दी फिल्मों और शर्म व हया को तार-तार करने वाली नंगी तस्वीरों से इस ख्वाहिश को ग़िज़ा दो, यहां तक कि तुम्हारा मन भर जाये, यहां तक कि ऑखों और कानों के रग व रेशे में उसके असरात उतर जायें, फिर तो भूगोल की किताब खोलकर बैठोगे तो उसमें भी यही चीज़ें नज़र आयेंगी। पूर्ण चन्द्रमा के उदय होने में,

सूरज की लालिमा में, रात के अंधेरे में, बेदारी और ख्वाब में, हर जगह तुम्हें वही कुछ नज़र आयेगा।

''जी चाहता है कि उसकी याद दिल से भुला दूँ मगर हर तरफ लैला ही लैला नज़र आती है''

तुम्हारी यह कैफ़ीयत उस वक्त तक बरक़रार रहेगी जब तक तुम हविश के शिकार न हो जाओ या दीवाना और पागल हो जाओ या मानसिक तनाव का शिकार न हो जाओ।

या फिर वह तरीक़ा अपनाओ जिसे आज कल हस्त मैथुन (Masturbation) कहते हैं जिसको अतीत में दूसरे नामों से पुकारते थे। इसके बारे में इस्लामी विद्वानों ने बहस की है और शायरों और कवियों ने उसकी तारीफ़ में शेअ्र कहे हैं। हम बिस्तरी और सहवास के विषय पर लिखी गयी किताबों में उसके लिये अलग से अध्याय रखा गया है। जी नहीं चाहता कि उसकी ओर इशारा करूं या उसके बारे में कुछ मार्गदर्शन दूँ। यह तरीक़ा जबकि तीनों तरीक़ों में सबसे कम बुरा और सबसे कम नुकसान देह है लेकिन अगर यह कृत्य सीमा पार कर जाये और उसका इस्तेमाल ज़्यादा होने लगे तो यह तबीयत को मुर्दा और शरीर को बीमार बना देता है और वह व्यक्ति जवानी में बुढापे का एहसास करने लगता है। उसकी शख्सीयत चकना चूर हो जाती है, मायूसी और उदासी का शिकार हो जाता है और डर और वहशत महसूस होने लगती है, लोगों से कटा-कटा रहने लगता है और लोगों के सामने आने की हिम्मत नहीं करता, ज़िन्दगी से नाउम्मीद हो जाता है और ज़िन्दगी के तक़ाज़ों को पूरा

करने से कतराता है। ये सारी चीज़ें उसे ज़िन्दगी ही में मौत का पैग़ाम देती है।

आख़िरी रास्ता यह बचता है कि हराम लज़्ज़तों के बन्धन में फंसकर गुमराही की डगर पर चल पड़ो, वैश्यागृहों की ओर रुख करो, अपनी सेहत और शबाब, अपना भविष्य और दीन सब कुछ इस वक्ती लुत्फ व लज़्ज़त की भेंट चढ़ा दो। अब तुम्हें अन्दाज़ा होगा कि तुमने वह रास्ता ही छोड़ दिया, जिसके लिये तुम लगातार संघर्ष कर रहे थे और मिलने वाली नौकरी भी जिसके लिये तुम बेक़रार थे। वह इल्म भी तुमसे रुखसत हुआ जिससे बड़ी उम्मीदें लगाये हुये थे। अब तुम्हारे पास वह ताक़त और मर्दानगी ही न रही जिसके बलबूते पर जीवन के रणक्षेत्र में उतर सको।

और उसके बाद यह हरगिज़ ख्याल न करना कि तुम अब मुत्मइन हो गये हो, अब किसी और तरफ़ नज़र नहीं जायेगी, यह नामुम्किन है। जब एक परी से मुलाकात का लुत्फ़ हासिल होगा तो औरों से भी मुलाकात का शौक़ बढ़ेगा। वजह--जब कोई शख्स खारा पानी पीता है तो बजाये उसको प्यास बुझाने और तरावट देने के, और ज़्यादा उसकी प्यास बढ़ा देता है। अगर तुम हज़ारों औरतों से भी आशनाई कर लो और उसके बाद कोई सुन्दरी नज़र आ जाये जो तुम्हारे पास आने के लिये तैयार भी न हो और बेरूखी इख्तेयार किये हो, फिर भी तुम्हारी यह ख्वाहिश होगी कि इस ''एक'' को हर हाल में हासिल कर लिया जाये इसके सिवा अगर वह न आये (या हाथ में आकर भी

निकल गयी) तो उसका भी रंज होगा। उस शख्स की तरह जिसने यह जाना ही न हो कि औरत क्या चीज़ होती है। शाह फ़ारूक (रंगीन मिज़ाज मिस्र का बादशाह) की मिसाल सामने है।

मान लो कि उन अप्सराओं से तुमने जो कुछ चाहा हासिल हो गया। तुम्हारे पास माल व दौलत का अंबार है और हुकूमत भी हासिल है मगर यह तो बताओ कि क्या तुम्हारा जिस्म तुम्हारी बुरी आदतों का साथ दे सकेगा और क्या तुम्हारी सेहत तुम्हारी हद से बढ़ी हुई जिंसी ख्वाहिशात (Sex) को बर्दाश्त कर सकेगी। तुम्हारी हैसीयत क्या है? यह बड़े-बड़े महाबलियों और पहलवानों का पित्ता भी पानी कर देता है। कितने ही ताक़त वर पहलवान, भारी वज़न उठाने वाले, तीर चलाने वाले और दौड़ में सबसे आगे निकल जाने वाले नौजवान जब जिन्सी ख्वाहिशात के पीछे पड़े और अपने नफ़्स के तक़ाज़े पूरे करने में लग गये तो राख का ढेर हो गये। अल्लाह तआला की हिकमत का एक अजूबा यह भी है कि उसने अच्छी आदतों के साथ सेहत और निशात की सूरत में इसका फ़ायदा भी रख दिया है। इसी तरह बुरी आदतों की सज़ा, सेहत की बर्बादी और बीमारियों की शक्ल में नुकसान भी निश्चित कर दिया है। कितने ही ऐसे मर्द हैं जो ज़िन्दगी की तीस बहारें भी नहीं देख पाते कि वह अपने करतूतों की वजह से साठ साल के नज़र आने लगते हैं और कितने ऐसे भी हैं जो अपनी परहेज़गारी और पाकदामनी की वजह से साठ साल की उम्र में भी तीस साल के दिखाई देते हैं। अग्रेंज़ों में एक कहावत मैंने सुनी है जो हक़ीक़त में

सही और सच्ची है कि ''जिसकी जवानी महफूज, उसका बुढ़ापा महफूज यानी सुरक्षित''

अगर मर्द अपनी फ़ितरत पर क़ायम रहे और नंगी तस्वीरों, गन्दे नाविलों, कहानियों, अश्लील फिल्मों की लुभावने माहौल में न हों, औरतें सरे बाज़ार खुले तौर से बेपर्दा न फिरें और बेशर्मी और बेहयायी की वबा न हो तो महीने में दो एक बार से ज़्यादा तबीअत में जोश नहीं आता। इसलिये कि इल्मी तौर पर यह एक साबित शुदा हक़ीक़त बन चुकी है कि जब भी इन्सान तरक़्क़ी की मंज़िले तय करता है तो जिन्सी ताल्लुक़ (Sexual desire) कमज़ोर पड़ जाता है और हमल (Pregnancy) ठहरने का अन्तराल भी बढ़ जाता है।

चुनांचे हम देखते हैं कि मुर्गे-मुर्गियों में यह जिन्सी अमल रोज़ाना ज़ारी रहता है इसलिये उनके शारीरिक निज़ाम में अण्डे की मुद्दते हमल एक दिन है लेकिन बिल्लियों (जो कि छाती से दूध पिलाने वाले जानवरों में से हैं) में जिन्सी ताल्लुक़ साल भर में सिर्फ एक दो बार होता है इसलिये वह साल में सिर्फ एक या ज़्यादा से ज़्यादा दो बार गर्भवती होती हैं। मेरा अपना ख्याल बल्कि यक़ीन है कि इन्सान बिल्ली के मुक़ाबले में ज़्यादा तरक़्क़ी याफ्ता हैवान है। फिर क्या वजह है कि बिल्ली के जिंसी सम्बंधों के लिये एक ही मौसम (अरब में फ़रवरी का महीना होता है) निर्धारित हो, और कुछ इन्सानों के लिये पूरा साल ''फ़रवरी'' बना रहे ? दरअस्ल इसके पीछे कुछ लालसा और दिल रुबाइयां हैं इस वजह से ऐसा है।

अस्ल मुसीबत तो यही लालसा और दिल रुबाइयां हैं जो बुरी इच्छाओं और शैतान के चेलों की तरफ से पेश की जाती हैं, जो औरत के लिये बेपर्दगी और बन संवर कर बाहर निकलने को सभ्य और रौशन ख्याली तथा औरतों की तरक्की के नाम पर आज़ादाना मेल जोल को खूबसूरत बनाकर पेश करते हैं।

दरहक़ीक़त औरतों से उनकी गरज़ सिर्फ इतनी ही होती है जितनी कि क़साई को बकरे से, वह उसे खिलाता पिलाता है, उसकी देख-रेख करता है, दुश्मन से उसको बचाता है और उसे खूब मोटा ताज़ा बनाता है लेकिन किस लिए? ज़िबह करने के लिये।

आज जो लोग अपने रिसालों और पत्रिकाओं में देशी-विदेशी अदाकारों की नंगी तस्वीरें सबसे ऊपर छापते हैं और फिर वरज़िश (व्यायाम) के बहाने स्कूली लड़कियों की, गर्मियों के सेर-सपाटे का मन्ज़र पेश करने के बहाने, समन्दर के साहिल पर तफ़रीह और मनोरंजन में मशगूल औरतों की तस्वीरें छापते हैं और यह सारे काम एक लम्बे समय तक एक मन्सूबा बन्द (योजनाबद्ध) स्कीम के तहत निश्चित तरीक़े पर निहायत जमाव के साथ शैतान की खुशी के लिये करते हैं। अगर उनका वजूद न होता और उनको यह पत्रिकायें नज़र न आतीं और उससे पहले यह उपन्यास और अफ़साने न होते और उसके बाद, यह फिल्में न होतीं और हमारे मदरसों में पढ़ने वाले लड़कों और लड़कियों का कोई रिश्ता गुमराही के इन अड्डों और कालेजों से फ़ारिग लोगों के हाथ में न होता तो आज यह दिन हरगिज़ न देखने

पड़ते, जिसका कभी वहमो गुमान भी न हुआ था कि एक दिन मुसलमान लड़कियां नंगी पिंडली, नंगी रान होकर बास्केट बाल खेलती या वरजिशी प्रोग्राम में प्रदर्शन करतीं, समन्दर किनारे प्रोग्रामों का आनन्द लेती नज़र आयेंगी। अगर आज क़ासिम अमीन (अरब निवासी एक प्रगतिशील साहित्यकार) और उसके साथी जो इस फ़ितना की जड़ थे– अपनी कब्रों से निकल आयें और उनकी दावत के नतीजे में आज औरत जिस मुक़ाम पर पहुंच चुकी है। (जहां तक ले जाने का उन्हें ख्याल भी न आया था) उसे देख लें तो होश उड़ जाये और बेहोश होकर गिर पड़ें।

यक़ीन जानो कि यह चीज़ अपनी हक़ीक़त के ऐतबार से उससे कहीं ज़्यादा मामूली और हकीर है, जितना तुम ख्याल कर सकते हो मगर इस सम्बंध से गुफ्तगू खुद उससे कहीं ज़्यादा बढ़कर बड़ी बात है। ये काम बज़ाते खुद इतना ज़्यादा असर नहीं रखता जितना कि इसका बयान अपने अन्दर असर डालने की सलाहियत रखता है। अगर क़िस्सा–कहानी, तस्वीरसाज़ी और संगीत की कला न होती और वह चीज़ न होती जो औरत को खूबसूरत और मुहब्बत को हसीन बनाकर पेश करती है जो नाजाइज़ जिन्सी सम्बंधों का तसव्वुर जो आज तुम्हारे दिल में मौजूद है उसका मामूली हिस्सा भी अपने अन्दर न पाते और न दूसरे नौजवानों में देखते । यह तो सरासर एक मेडिकल आपरेशन की कार्यवाही की तरह है। दरहक़ीक़त यह अपने वजूद के ऐतबार से नजिस और नापाक हो चुका है। इसीलिये अल्लाह ने उसके लिये यह भंग पैदा की है जो

इन्सान को अन्धा व बहरा कर देती है और उसके इस्तेमाल के बाद इन्सान को अच्छे बुरे का फ़र्क़ नही रह जाता। यह भंग दरहक़ीक़त सुबूत है अगर इन्सान यकसू होकर ग़ौर व फिक्र करे और उस अक़्ल से सोचे जो उसके दिमाग़ में है, न कि उस अक्ल से जो जज़्बात और ख्वाहिशात की ग़ुलाम है, तो वह खराब सूरतेहाल हर्गिज़ पेश न आये।

एक बात यह याद रखने की है कि यह दिल फ़रेबियां और सारी तर्ग़ीबात अपना काम उस वक्त तक नहीं करतीं जब तक कोई बुरा साथी न मिल जाये। वह तो बेहयायी और बेशर्मी के रास्ते की ओर तुम्हारी रहनुमाई करेगा और उसके दरवाज़े तक तुम्हें पहुंचा कर छोड़ेगा। दिल फ़रेबियों की मिसाल इस मोटरकार की है जो सारे साज़ व सामान से लैस तैयार खड़ी है और उस बुरे साथी की मिसाल उस बैटरी की है जिसके बग़ैर वह गाड़ी नही चल सकती चाहे वह कितनी ही ताक़तवर हो।

अब तुम कहोगे कि बीमारी तो यह रही, आख़िर इसकी दवा क्या है ? इसका इलाज यह है कि हम सुन्नतुल्लाह की तरफ रुजू करें और जिस चीज़ का जो मिज़ाज हो, इस्तेमाल में उसकी रियायत का लिहाज़ रखें। अल्लाह तआला का यह क़ायदा है कि जहां वह कोई चीज़ हराम ठहराता है तो वहां उसकी जगह कोई चीज़ हलाल कर देता है। उसने सूदी कारोबार और सूदी लेन-देन को हराम ठहराया तो तिजारत को हलाल और जाइज कर दिया, ज़िना (व्यभिचार) को हराम क़रार दिया तो शादी को हलाल ठहराया। चुनांच इस मर्ज़ का इलाज शादी ही है।

शादी ही दरअस्ल इस्लाह का वाहिद ज़रिया है।

मैं तो इस्लामी तन्ज़ीमों और इस्लाही संस्थाओं के सामने यह तजवीज (प्रस्ताव) रखता हूँ कि वह ऐसे नये अन्दाज़ की संस्थायें कायम करें जो शादी के लिये नौजवानों की हौसला अफज़ाई करें और उन्हें उसकी तर्ग़ीब दें और उसकी तरफ़ दावत दें, शादी को उनके लिये आसान करें और ज़रूरत मन्द नौजवानों को ऐसी लड़कियों की निशानदेही करें जो उनके लिये, और वह उनके लिये मुनासिब हों। अगर कोई नौजवान तंगदस्त हो तो बतौर कर्ज़ उसकी माली मदद की जाये।

इस तजवीज़ की कुछ तफ़सीलात और उस सम्बंध से कुछ दूसरी बातें हैं। जिन लोगों को इस सिलसिले में दिलचश्पी हो और वह इस तजवीज़ को अमली जामा पहनाना चाहें, मैं उन्हें तफ़सीलात से आगाह कर दूंगा।

अगर तुम्हारे पास शादी के अस्बाब मुयस्सर न हों और बुरे कामों से भी बचना चाहते हो तो इसके सिवा चारा नहीं कि बुलन्द अखलाक़ी खूबियों वाले बनों और उन पस्त चीज़ों से बुलन्दतर हो जाओ। मैं अपने मक़सद को जाहिर करने के लिये साइकोलोजी की भारी-भारी टर्मिनालाजी इस्तेमाल करके इस बहस को मुश्किल बनाना नहीं चाहता। इसलिये एक मिसाल के ज़रीये से तुम्हे समझाना चाहता हूँ।

चाय की केतली पर नज़र डालो जिसके नीचे आग दहकती रहती है। अगर केतली खूब मजबूती से ढक दो और उसके नीचे आग की लौ तेज़ कर दो तो उसके अन्दर गर्म भाप ब्लास्ट होकर केतली के परखचे उड़ा देगी। अगर

इसमें सूराख करके पानी बहा दो तो केतली जल जायेगी लेकिन अगर इस भाप का कनेक्शन किसी पाइप से जोड़ दो तो वह फैक्ट्री और ट्रेन का इन्जन भी चला सकती है। और दूसरे हैरत अंगेज़ कारनामे अंजाम दे सकती है।

यह मिसाल उस शख्स की है जो जिन्सी ख्वाहिशों को दबाकर रखता है उसके लिये फिक्रमंद रहता है और उस पर रोक लगाये रहता है।

दूसरी मिसाल उस शख्स की है जो सच्चाई की राह खोकर गुमराही की पगडन्डियों में भटक जाता है और उन मुक़ामात का इरादा करता है जहां हराम लज़्ज़तों से आनंदित हो सके।

और तीसरी मिसाल बुलन्द अखलाक़ इख्तियार करने वाली की है, बुलन्द अखलाक़ी यह है कि रूहानी, अक़्ली, कल्बी या जिस्मानी मेहनत के ज़रीये शहवानी (वासना) ख्यालात से अपने को दूर रखो, उससे तुम्हारी तबीयत को आराम और सुकून मिलेगा, यह चीज़ तमामतर महफूज़ जिन्सी क़ूव्वत को जज़्ब कर लेगी और फिर यह इनर्जी अल्लाह की याद और इबादत में लगेगी या फिर यकसू होकर बहस व तहक़ीक़ के समन्दर में गोता लगायेगी या इसकी फ़राग़त आर्ट की तरफ़ मुतवज्जे होगी, या तुम्हारे दिल व दिमाग़ में जो ख्यालात व तसव्वुरात उभरते हैं वह शेअर की सूरत में ढल जायेंगे या पेन्टिंग और अच्छी आवाज़ की शक्ल में ज़ाहिर होंगे या उनका रुख जिसमानी मेहनत, तर्बियत और पहलवानी के शौक की तरफ़ हो जायेगा।

बेटे ! हर इन्सान को अपना वजूद महबूब होता है और उसके प्रति वह ख़ैर ख़्वाह होता है और उस मामले में किसी दूसरे को अपने ऊपर प्राथमिकता नहीं देता है। जब वह शीशे के सामने खड़ा होता है और कान्धों की गोलाई, सीने का उभार और मज़बूत कलाइयां उसे नज़र आती हैं तो वह बेहद खुश होता है यहां तक कि उसे अपना गठा हुआ मज़बूत बदन किसी औरत के बदन से ज़्यादा भला मालूम होता है और वह किसी क़ीमत पर उसको क़ुर्बान करना पसन्द नहीं करता, न वह उस बात के लिये तैयार हो सकता है कि अपनी यह ताक़त किसी नौजवान लड़की की सुर्मगीं या नीलीं ऑखों पर क़ुर्बान कर दे और अपने जौहरे जिस्म को निचोड़ कर सिर्फ़ हड्डी-चमड़े का ढांचा रह जाये।

मालूम हुआ कि शादी ही इस बीमारी का अस्ल इलाज है और यही मुकम्मल इलाज है अगर यह इलाज मुयस्सर न हो तो फिर आदमी उन जिन्सी अफ़्कार व ख्यालात से ऊपर उठ कर उम्दा अखलाक़ इख्तियार करे। इसी से वक्ती सुकून नसीब हो सकता है और यह बड़ा सुकून पहुँचाने वाला है। हर हाल में फायदेमंद है, नुकसान का कोई इम्कान नहीं।

रही दलील इन बुराइयों की कि इस सामूहिक बिगाड़ का इलाज यह है कि मर्दों और औरतों को आज़ादाना मेल जोल का आदी बनाया जाये कि उससे कामोत्तेजना कमज़ोर पड़ जायेगी और उसी के साथ कोठे आबाद किये जायें जहां छुपकर गन्दे काम किये जा सकें। तो यह सब अर्नथक और

बकवास है। ग़ैर मुस्लिम दुनिया ने आजादाना मेल जोल का तजुर्बा कर लिया है। नतीजा सिवाये व्यभिचार और सामूहिक बिगाड़ में वृद्धि के और कुछ नहीं निकला है।

रही बात वैश्यालाओं और चकलों की तो अगर हम उसकी अहमीयत को तसलीम करलें तो फिर यह लाज़िम आयेगा कि बड़े पैमाने पर उसका प्रबन्ध हो ताकि सारे नौजवानों की ज़रूरत पूरी हो सके।

इस सोंच को अगर सही मान लिया जाये तो उसके मुमाबिक़ काहिरा में दस हज़ार से भी ज्यादा वैश्यायें होनी चाहियें क्यों कि काहिरा में 25 लाख की आबादी में कम से कम दो लाख नौजवान तो ज़रूर ही होंगे। अगर नौजवानों के लिये हम इसके जाइज़ होने का प्रमाण पत्र दे देंगे तो उन्हें शादी ब्याह की भी ज़रूरत नहीं रह जायेगी। मगर फिर बेटियों को क्या करेंगे ? क्या उनके लिये ऐसे चकले आबाद करेंगे, जहां तवायफ पेशा मर्द रहा करेंगे ?

बेटे ! बखुदा यह सब फ़ुज़ूल और बकवास है ।

यह बातें वह अपनी अक्ल से नहीं बल्कि शारीरिक और नफ़्सानी तकाज़ों के ज़ेरे असर कह रहे हैं। जिनसे उनकी नियत अखलाक़ी इस्लाह नहीं है और न उनके पेशेनज़र औरत जाति की भलाई और कामयाबी है। न इसके माध्यम से वह तमन्दुन (सभ्यता) की तालीम देना चाहते हैं न उससे उनका मक़सूद रूहानी रियाज़त है और न हमःगीर (सर्वव्यापी) ज़िन्दगी का तसव्वुर उसके सामने है। यह तो दरअस्ल खेल है मात्र कुछ शब्दों का। वह आये दिन एक नई शब्दावली गढ़ करके लोगों को रोब डालते हैं। इस सारी

दौड़ धूप का एक मक़सद हमारी बहनों और बेटियों को घर की सुरक्षित चार दीवारी से बाहर निकाल लाना है ताकि वह उनके छिपी हुई और ज़ाहिरी हुस्न से लुत्फ अन्दोज़ हो सकें और हलाल व हराम हर प्रकार के मज़े और लज्ज़त से आनंदित होने की तमन्ना पूरी हो। सफ़र पर जायें तो उनहें तनहा साथ ले जायें और महफ़िलों में जायें तो सज–धज के साथ उनसे डांस करायें। ताज्जुब तो इस बात पर है कि कुछ मां–बाप भी इस मामले में धोखा खा जाते हैं और तरक़्क़ी याफ्ता और सभ्य कहलाने की ख्वाहिश में वह अपनी बेटियों की इज़्ज़त क़ुर्बान कर देते हैं।

बेटे ! अगर इस जवाब से तुम मुत्मइन न हुये हो तो मुझे बे झिझक खत लिखना। क़ुदरत ने तुम्हारे अन्दर जो जिन्सी जज़्बा (वासना) रखा है अगर उसमें उत्तेजना और जोश महसूस हो रहा हो तो यह शर्म की कोई बात नहीं है। यह तो दरअस्ल ताक़त, हिम्मत और जवानी की अलामत है। उसकी परवाह किये बग़ैर कि तुम तालिब इल्म हो, शादी ज़रूर कर लो। लेकिन अगर शादी करने की स्थित में नहीं हो तो अल्लाह का खौफ़ अपने ऊपर तारी रखो और इबादत व मुताले में केन्द्रित हो जाओ, आर्ट में रुचि पैदा करो। और हां वरज़िश ज़रूर किया करो क्यों कि यह बेहतरीन इलाज है।

बात लम्बी हो जायेगी । जितनी गुन्जाइश थी जो लिख सकता था लिख दिया। हां अगर कोई और ज़्यादा जानने का ख्वाहिशमन्द होगा तो इन्शा अल्लाह एक पुस्तक और लिखूंगा। या प्रकाशक लोग अगर चाहेंगे तो एक लेख भी लिख दूंगा ।